25

वस्त्र परिसज्जा

जब हम वस्त्र खरीदने के लिये बाज़ार जाते हैं और कई प्रकार के वस्त्र देखतें हैं तो खरीदने से पहले उनके बारे में दुकानदार से कई प्रश्न कर जानकारी लेते हैं। जैसे, क्या यह वस्त्र धोने पर सिकुड़ेगा? क्या इसका रंग पक्का है? क्या इसे घर पर धोया जा सकता है या ड्राइक्लीनिंग करवानी पड़ेगी? कुछ वस्त्रों पर पक्के रंग, सिकुड़न रहित या धोओ और पहनो (wash & wear) के निर्देश का लेबल लगा होता है। हम लिज़ी बिज़ी, चांदनी, चिनॉन, क्रिंकल आदि के नामों से भी परिचित हैं। अधिकतर इन शब्दों या नामों से हमें अधिक जानकारी नहीं मिलती। कभी दुपट्टा रंगने वाला कहता है इसे रंगा नहीं जा सकता क्योंकि यह पॉलिएस्टर है। क्या इसका अर्थ यह है कि पॉलिएस्टर वस्त्रों पर रंग नहीं चढ़ता? परंतु हमें तो विभिन्न प्रकार के पॉलिएस्टर दुपट्टे दुकानों पर दिखते हैं। उन्हें कैसे रंगा जाता है? जब हम सूट का कपड़ा खरीदने बाजार जाते हैं तब दुकानदार हमें डिज़ाइनदार वस्त्र दिखाता है जो बांधनी या बाटिक के होते हैं। ये डिज़ाइन किस प्रकार बनाये जाते हैं? इस पाठ में हम ऐसे सभी प्रश्नों के उत्तर पायेंगें।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात आप निम्नलिखित कर सकेंगेः

- परिसज्जा का अर्थ समझना व वस्त्रों पर इनको लगाने का महत्व बताना;
- परिसज्जाओं का वर्गीकरण करना और प्रत्येक के महत्व को समझाना;
- रंजकों के प्रकार व उनके विशिष्ट गुणों की व्याख्या;
- रंगाई की प्रक्रिया के चरणों का उल्लेख;
- बंधेज, बाटिक और प्रिटिंग की प्रक्रिया का प्रदर्शन।

टिप्पणी

25.1 परिसज्जा क्या है?

क्या आपने करघे पर बने वस्त्र को देखा है? आमतौर पर यह वस्त्र खुरदुरा, दाग धब्बे वाला होता है तथा इसे ग्रे वस्त्र के नाम से जाना जाता है। रजाई के खोल बनाने के लिये उपयोग किया जाने वाला मारकीन कपड़ा पीलापन लिये हुये और गंदा होता है। यह भी ग्रे कपड़ा कहलाता है। पर ज्यादातर कपड़े जिन्हें हम दुकान से खरीदते हैं, चिकने, साफ और स्वच्छ होते हैं। ऐसा क्यों होता है? ऐसा कपड़ों पर की गई परिसज्जा के कारण होता है।

> वस्त्रों पर बुनाई के बाद की जाने वाली कोई भी प्रक्रिया, जो वस्त्र के रूप, स्पर्श व उपयोगिता में सुधार लाए परिसज्जा कहलाती है।

जब सूती कपड़े पर परिसज्जा की जाती है, तो यह अधिक चमकीला, मजबूत व धोने पर सिकुड़न रहित हो जाता है। इसी प्रकार अन्य परिसज्जाऐं वस्त्र को कोमल या कड़ा, जल या धब्बा प्रतिरोधक, रंगीन या डिज़ाइनदार बना सकती हैं।

25.2 परिसज्जाओं का वर्गीकरण

परिसज्जाओं का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया जाता है।

(a) स्थाई व नवीकरणीय (अस्थाई) परिसज्जा

(b) आधारभूत (मूल) तथा विशिष्ट परिसज्जा

आधारभूत परिसज्जाएं आमतौर पर सभी वस्त्रों पर उनके रूप को सुधारने के लिये दी जाती हैं। विशिष्ट परिसज्जा किसी विशेष कारण या उपयोग की दृष्टि से दी जाती है।

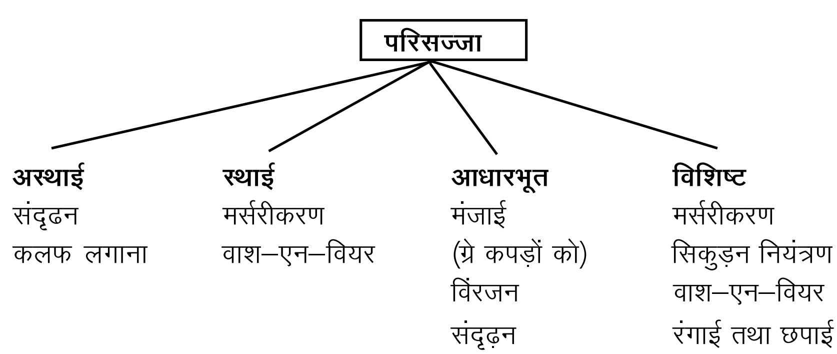

चित्र 25.1

अक्सर हमारे सामने यह समस्या आती है कि वस्त्रों को धोने व पहनने के बाद उनका कड़ापन खत्म हो जाता है और उस पर सलवटें पड़ जाती हैं। ऐसी स्थिति में हम क्या कर सकते हैं? हर बार धोने के बाद कपड़े पर हम कलफ लगाते हैं और इस्त्री करते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि कुछ परिसज्जाएं धोने व ड्राइक्लीनिंग तक ही प्रभावशाली होती हैं। परंतु कुछ ऐसी भी हैं जो एक बार दी जायें तो कपड़े पर बनी रहती हैं जैसे सिलवट प्रतिरोधी व वाश–एन–वियर परिसज्जा। इन परिसज्जाओं पर धुलाई, ड्राइक्लीनिंग

या इस्त्री करने से कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता। इस प्रकार की परिसज्जाएं टिकाऊ होती है परंतु घर पर नहीं दी जा सकती। कुछ स्थाई परिसज्जाएं विशिष्ट या आधारभूत हो सकती हैं।

पाठगत प्रश्न 25.1

1. कोष्ठक में दिए संकेत शब्दों को ठीक करके रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।
   1. परिसज्जा वस्त्र की .... और .... में सुधार के लिये दी जाती है। (उतापयोगि), (परू)
   2. परिसज्जा का वर्गीकरण .... या .... और .... या .... के अनुसार कर सकते हैं। (धारआतभू), (ष्टशिवि), (ईस्थाअ), (ईस्था)
   3. वह परिसज्जा जो हर धुलाई के बाद दी जाती है उसे .... कहते हैं। (ईस्थाअ)
   4. करघे से प्राप्त होने वाले खुरदुरे, मैले व धब्बे युक्त वस्त्र को .... कहते हैं। (पड़ाक ग्रे)
   5. जो परिसज्जा लगभग प्रत्येक वस्त्र पर लगाई जाती है वह .... कहलाती है। (धारआतभू)

25.3 कुछ सामान्य परिसज्जाएं

अब हम विभिन्न परिसज्जाओं की मूलभूत विशेषताओं के बारे में विचार करेंगे

(A) आधारभूत परिसज्जाएं

(i) मंजाई (Scouring) /सफाई

ग्रे कपड़े के रूप में प्राप्त वस्त्र में प्राकृतिक रूप से कई अशुद्धियां पाई जाती हैं। यह वस्त्र निर्माण के समय लगे हुए तेल, मोम और मैल के धब्बे हो सकते हैं। किसी भी परिसज्जा को करने से पहले इन अशुद्धियों की पूर्ण सफाई बहुत महत्वपूर्ण होती है। यह मंजाई (scouring) कहलाती है जो प्रायः सभी वस्त्रों को दी जाती है। इसके लिये साबुन व अन्य रासायनिक पदार्थों का उपयोग किया जाता है। सफाई के पश्चात वस्त्र अधिक चिकना, साफ व अवशाषक बन जाता है।

क्रियाकलाप 25.1: एक नये व पुराने धुले वस्त्र को लेकर उसे पानी में डाल दीजिये। आपने क्या देखा? पुराना वस्त्र जल्दी डूबेगा क्योंकि उसकी अवशोषण शक्ति अधिक है। जैसे ही यह पानी सोखेगा यह भारी होकर डूब जायेगा।

(ii) विरंजन (Bleaching)

जब वस्त्र तैयार होते हैं तब वह अशुद्धियों व रंग सामग्री की उपस्थिति के कारण एकदम सफेद रंग के नहीं होते। उन्हें सफेद व हल्के रंग में रंगने से पहले विरंजन क्रिया की जाती है। वस्त्र के अनुसार उपयुक्त विरंजक पदार्थों का चयन करके वस्त्रों से रंग हटाया जाता है। विरंजक क्रिया सूती, ऊनी व सिल्क के कपड़ों पर की जाती है। मानव निर्मित वस्त्रों पर विरंजन क्रिया नहीं की जाती क्योंकि वह प्राकृतिक रूप से ही सफेद होते हैं। क्या आपको कुछ मानव निर्मित वस्त्रों के नाम याद हैं?

विरंजक क्रिया बहुत सावधानीपूर्वक करनी चहिये क्योंकि रंग को हटाने वाला रासायनिक पदार्थ कपड़े को भी कुछ हद तक हानि पंहुचा सकता है। हाइड्रोजन–पर–आक्साइड एक सार्वभौमिक विरंजक है जिसका सभी प्रकार के वस्त्रों पर उपयोग किया जा सकता है।

(iii) संदृढ़न (Stiffening)

संदृढ़न का अर्थ है, सामान्य तौर पर जो वस्त्र लचीला हो वह संदृढ़न के पश्चात कड़क बन जाता है। घर पर आप अपने कपड़ों को किस प्रकार कड़क बनाते हैं? हाँ, आप अरारोट/मैदे का कलफ या चावल का माँड प्रयोग करते हैं। रेशमी कपड़ों को कड़क करने के लिये गोंद का प्रयोग किया जाता है। कड़ेपन से वस्त्र भारी, चिकना व चमकीला बन जाता है। कई बार दुकानदार इसका लाभ उठाकर ग्राहकों को ठगते हैं। आपने देखा होगा कि कुछ वस्त्रों को यदि हाथ से रगड़ा जाये तो सफेद पाउडर झड़ता है। ऐसा कपड़े को अधिक मात्रा में कलफ लगाने के कारण होता है। घटिया वस्त्रों को अधिक मात्रा में कलफ लगा दिया जाता है। ऐसे वस्त्रों को नहीं खरीदना चाहिये। क्या आप बता सकते हैं क्यों?

क्रियाकलाप 25.2 : एक कलफ लगे कपड़े को लेकर उंगलियों के बीच रगड़िये। फिर वस्त्र को प्रकाश के सामने ले जाकर परखिये। स्टार्च के झड़ जाने के कारण रगड़े गये स्थान पर बुनाई के छिद्र अधिक खुले प्रतीत होंगे। इससे पता चल जायेगा कि वस्त्र की गुणवत्ता कैसी है। इस क्रियाकलाप द्वारा आप श्रेष्ठ गुणवत्ता वाले वस्त्र का चुनाव कर सकेंगे।

(B) विशिष्ट परिसज्जाएं

(i) मर्सरीकरण (Mercerization)

परिसज्जा से पहले सूती कपड़ा निष्प्रभ व खुरदुरा होता है जिस पर आसानी से सिलवटें पड़ जाती हैं। जब रासायनिक पदार्थों जैसे कि सोडियम हाइड्रोक्साइड के उपयोग से इस सूती वस्त्र पर मर्सरीकरण किया जाता है तो यह मजबूत, चमकीला और रंग आसानी से अवशोषित करने वाला बन जाता है। यह एक स्थाई परिसज्जा है। आजकल यह परिसज्जा सूती वस्त्रों पर नियमित रूप से की जाती है। सिलाई के उपयोग में आने वाले धागे भी मर्सराइज़ किये जाते हैं। क्या आप बता सकते हैं क्यों?

(ii) सिकुड़न नियन्त्रण (Shrinkage control)

जब आपकी नई कमीज़ धोने के बाद छोटी हो जाती है तब क्या होता है?

धोने के पश्चात वस्त्र के आकार में छोटा होना ही **सिकुड़न** है।

यदि वस्त्र पर लगे लेबल पर सेनफोराइज़्ड या सिकुड़न प्रतिरोधक या एन्टीश्रिन्क लिखा हो तो इसका अर्थ है कि वस्त्र में सिकुड़न नियन्त्रण के लिये परिसज्जा की गयी है। ऐसा वस्त्र धोने पर छोटा नहीं होगा। यदि वस्त्र पर यह लेबल नहीं लगा है तब आप घर में ही वस्त्र को सिकुड़न रहित कर सकते हैं। हो सकता है आप ऐसा करते भी हों। साड़ी पर फॉल लगाने से पहले या कपड़े से सूट बनवाने से पहले आप कपड़े को पानी में कुछ देर भिगोकर रखते हैं। कपड़ा खरीदते वक्त आवश्यकता से कुछ अधिक ही कपड़ा खरीद कर इस को पानी में रातभर भिगोइये, निचोड़िये और सुखाइये। इस प्रकार के वस्त्र से बना कपड़ा धोने पर फिर नहीं सिकुड़ेगा।

क्रियाकलाप 25.3: एक नया, बिना धुला खादी का कपड़ा लीजिये। उसमें से 15 सें.मी. का चौकोर टुकड़ा काट लीजिये। कपड़ा धोकर सुखा लीजिये। सूखने पर कपड़े को नाप लीजिये। क्या आकार में कुछ परिवर्तन हुआ? यदि आकार में कोई परिवर्तन नहीं हुआ, इसका अर्थ है कि वस्त्र सिकुड़ा नहीं। आकार में अन्तर कपड़े के सिकुड़न का स्पष्ट संकेत है।

(iii) जल अवरोधन (Water proofing)

बरसाती, छाते व तिरपाल में प्रयुक्त होने वाले वस्त्रों में रासायनिक क्रिया द्वारा जल अवरोधक गुण उत्पन्न किये जाते हैं। इस प्रकार की परिसज्जा को वाटर प्रूफिंग कहते हैं और यह एक स्थाई परिसज्जा है।

(iv) पार्चमेंटीकरण

क्या आपने ऑरगन्डी वस्त्र में दूसरे वस्त्रों से कुछ भिन्नता पाई है? यह झीना लेकिन कड़क है, यह पारदर्शी भी है ओर धोने के उपरान्त भी इसका कड़ापन बना रहता है। ऐसा पार्चमेंटीकरण परिसज्जा के कारण है जो वस्त्रों को स्थाई कड़ापन देती है। इसी कारण ऑरगन्डी साड़ी को स्टार्च लगाने की आवश्यकता नहीं होती।

(v) वाश-एन-वियर

आप जानते हैं कि सूती वस्त्र उपयोग करने से बुरी तरह मुस जाते हैं। वाश–एन–वियर परिसज्जा के कारण वस्त्रों की देखरेख आसान हो जाती है क्योंकि उन्हें बार–बार इस्त्री करने की आवश्यकता नहीं रहती। वस्त्रों पर सलवटें भी कम पड़ती हैं। यह परिसज्जा भी स्थाई है और इसके लिये रेज़िननुमा रासायनिक पदार्थों का उपयोग किया जाता है।

(vi) रंगाई और छपाई

बाजार में उपलब्ध वस्त्र सफेद, रंगीन डिज़ाइन या फिर सादे रंगों के मिलते हैं। वस्त्रों पर रंगने और डिज़ाइन बनाने की प्रक्रिया को रंगाई व छपाई करना कहते हैं। रंगाई से संपूर्ण कपड़े पर रंग आ जाता है जबकि कपड़ों के कुछ खास हिस्सों में रंगों से डिज़ाइन बनाने को छपाई कहते हैं। यह बहुत ही महत्वपूर्ण है कि रंगीन व छपे हुये कपड़े का रंग पक्का (दृढ़ या कलर फास्ट) होना चाहिये, क्योंकि यदि रंग धोने, रगड़ने या इस्त्री करने पर निकलता है तो डिज़ाइन खराब हो जाता है।

पक्के रंग की पहचान करने के लिये एक गीले, सफेद रूमाल को रंगीन कपड़े पर रगड़िये। यदि रंग रूमाल पर लग जाय तब रंग पक्का नहीं है। ऐसे कच्चे रंग के वस्त्र न खरीदें। यदि आपने कच्चे रंग का नया सूती वस्त्र खरीदा हो तो उसे नमक वाले ठंडे पानी में भिगो कर रखें। इससे रंग कुछ हद तक पक्का हो जायेगा।

पाठगत प्रश्न 25.2

1. सही व गलत बताएं व स्पष्टीकरण दें।

   (i) मंजाई परिसज्जा वस्त्र को साफ करती है।

   स्पष्टीकरण...

   (ii) विरंजन का वस्त्र पर कोई हानिकारक प्रभाव नहीं होता है।

   स्पष्टीकरण...

   (iii) सिकुड़न नियन्त्रण परिसज्जा घर पर भी की जा सकती है।

   स्पष्टीकरण...

   (iv) ऑरगन्डी स्थाई रूप से कड़क वस्त्र है।

   स्पष्टीकरण...

   (v) सिलाई के लिये मर्सराइज्ड धागा प्रयोग करना चाहिये।

   स्पष्टीकरण...

2. कोष्ठक से सही शब्द को चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करिये।

   (i) मर्सरीकरण .... परिसज्जा है। (स्थाई, अस्थाई)

(ii) वस्त्र के लेबल पर सिकुड़न नियंत्रण ें........................ के नाम से भी अंकित होता है। (र्पाचमेन्टीकरण/सेन्फोराइज़्ड)

(iii) जल प्रतिरोधन ें........................ परिसज्जा है। (आधारभूत/विशिष्ट)

(iv) यदि धोने पर रंग नहीं निकलता तो वस्त्र पर ें........................ परिसज्जा की गयी है (जल प्रतिरोधक/रंग दृढ़ता)

3. वस्त्र में निम्न गुण प्राप्त करने के लिये प्रयोग की जाने वाली परिसज्जा का नाम लिखिये।

(i) (a) मज़बूत व चमकदार सूती वस्त्र

(b) अच्छी रंग अवशेषकता

परिसज्जा..

(ii) (a) कड़क सूती वस्त्र

(b) गर्मियों में की जाने वाली दैनिक धुलाई को झेलने योग्य

परिसज्जा..

(iii) (a) सूती वस्त्र जो आसानी से सिकुड़ता न हो।

(b) जिसमें बारबार इस्तिरी करने की आवश्यकता न हो।

परिसज्जा..

(iv) (a) वस्त्र अवशोषक न हो।

(b) वस्त्र से पानी आर–पार न जा सके।

परिसज्जा..

25.4 रंगाई/रंग से परिसज्जा

वस्त्र पर रंग प्रयोग करने की प्रक्रिया को रंगाई कहते हैं। सामान्यतः वस्त्रों पर रंगाई छपाई का काम मूल परिसज्जा के बाद, परन्तु अन्य परिसज्जाओं से पहले ही किया जाता है। परंतु प्रश्न उठता है कि हम कपड़े रंगते क्यों हैं? रंगाई मुख्यतः कपड़े को रंगकर उसकी रूपसज्जा में सुधार लाने के लिये की जाती है।

उत्पत्ति के आधार पर रंजकों का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया जाता है।

(A) प्राकृतिक

(i) केसर

(ii) मेहंदी

(iii) नील

(B) रासायनिक

अम्लीय रंजक (Acid)

क्षारीय रंजक (Basic)

एज़ोइक (Azoic)

स्वतः रंजक (Direct)
परिक्षिप्त रंजक (Disperse)
प्रतिधारी रंजक (Reactive)
वैट रंजक (Vat)

रंजक को रंग भी कहते हैं।

आइये अब प्रत्येक समूह को देखें–

प्राकृतिक रंजक- यह रंजक प्रकृति में उपलब्ध पदार्थों से बनाये जाते हैं, (जैसे पौधे, कीट, खनिज)

रासायनिक रंजक- यह रंग प्राकृतिक स्रोतों से प्राप्त नहीं होते। यह विभिन्न रासायनिक पदार्थों को संश्लेषित करके बनाये जाते हैं। रासायनिक रंग सस्ते, उपयोग में आसान और पक्के होते हैं पर ये जल प्रदूषण का कारण बनते हैं।

25.4.1 रंगाई के चरण

बाज़ार में न केवल रंगे हुये वस्त्र बल्कि सिलाई बुनाई के धागे भी विभिन्न रंगों में मिलते हैं। आइये देखें रंगाई किन–किन अवस्थाओं में की जाती है।

(1) **तन्तु अवस्था-** इस अवस्था में प्राकृतिक व मानव निर्मित दोनों ही प्रकार के तन्तु रंगे जा सकते हैं। तन्तुओं पर एक समान और पक्का रंग चढ़ता है, परंतु बाद में होने वाली विभिन्न प्रक्रियाओं से बहुत से तन्तु खराब हो जाते हैं।

(2) **सूत अवस्था-** कई बार सूत को भी रंगा जाता है। विशेषकर यदि उन्हें सूत अवस्था में ही बेचना हो। कढ़ाई के सूत, सिलाई के सूत व बुनाई के सूत की रंगाई इसी अवस्था में की जाती है।

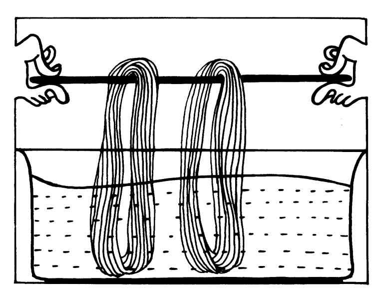

चित्र 25.1: सूत अवस्था में रंगाई

(3) **वस्त्र अवस्था-** यह वस्त्र रंगने की सबसे अधिक प्रचलित अवस्था है। ज्यादातर वस्त्र जो एक रंग में रंगे जाते हैं इसी अवस्था में रंगे जाते हैं। यह रंगाई की त्वरित विधि है और इसमें रंगों का मिलान करना आसान होता है। मिश्रित वस्त्रों को भी इस अवस्था में आसानी से रंगा जा सकता है।

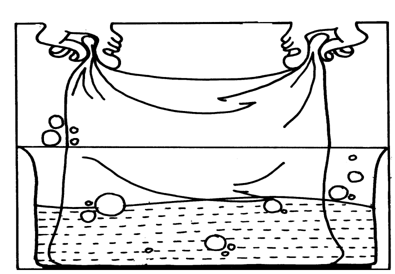

चित्र 25.2: वस्त्र अवस्था में रंगाई

(4) **कपड़ों की रंगाई-** कभी–कभी कपड़ा सिलने के बाद उन्हें रंगने की आवश्यकता पड़ती है उदाहरण के लिये दुपट्टे बाद में भी रंगे जाते हैं।

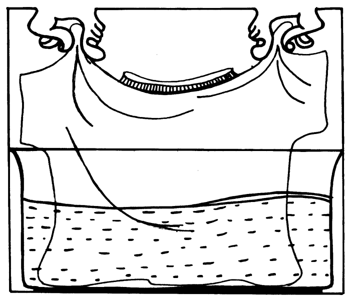

चित्र 25.3: कपड़ों की रंगाई

25.5 रंगाई व छपाई द्वारा डिज़ाइन बनाना

वस्त्र पर डिज़ाइन बनाने के लिये रंगों को सावधानीपूर्वक चुने हुये स्थान या आकृति पर लगाना चाहिये। यह कार्य निम्न तकनीकों के उपयोग से किया जा सकता है।

(A) बंधेज **(B) बाटिक** **(C) ब्लॉक प्रिटिंग**

(A) बंधेज या टाई एण्ड डाइ

आपने बांधनी से बने आकर्षक दुपट्टे देखे ही होंगे जिनमें पूरा वस्त्र सफेद बिंदुओ से भरा होता है। क्या आपने कभी सोचा कि इस तरह का प्रभाव किस प्रकार वस्त्र पर प्राप्त किया गया है! यह रंगाई की एक विधि बंधेज से संभव हुआ।

बंधेज रंग प्रतिरोध की एक प्रक्रिया है।

रंग प्रतिरोध का अर्थ है कि वस्त्र में कुछ ऐसा किया जाय ताकि रंग के लिये अवरोध उत्पन्न हो। किसी स्थान विशेष को बांधकर रंगने से बंधे हुये स्थान पर रंग प्रवेश नहीं कर सकता। इस बांधनी की प्रक्रिया में वस्त्र के कुछ चुने हुये भाग को डिज़ाइन के अनुसार बांध देते हैं। परिणाम स्वरूप रंग उन कुछ बंधे हुये हिस्सों में नहीं जा पाता। इस प्रक्रिया से आप विभिन्न प्रकार के डिज़ाइनों की रचना कर सकते हैं।

बांधनी के अनेक तरीके हैं। उनमें से कुछ निम्न प्रकार हैं।

(1) **मार्बलिंग या गोला बनाकर-** कपड़े को मुठ्ठी में मोड़–तोड़ कर पकड़कर, विभिन्न स्थानों पर बांध दीजिए। फिर कपड़े को रंगकर, सूखे कपड़े को खोल कर देखिए।

(2) **बांधना-** कपड़े को एक बिंदु से उठाकर समान दूरी पर धागे से बांध दें ।

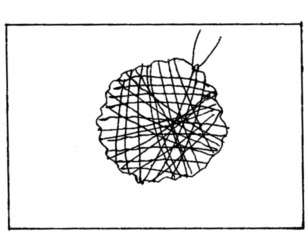

चित्र 25.4: मार्बलिंग

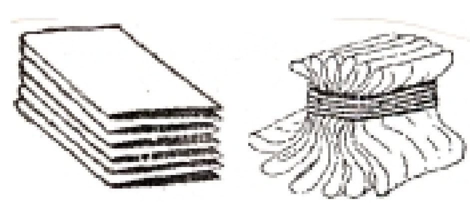

चित्र 25.5

(3) **गांठ बांधना-** डिज़ाइन के अनुसार कपड़े पर गांठे बांध दें और फिर रंगाई कर लें।

चित्र 25.6

(4) **तह लगाना-** कपड़े की तहें भिन्न–भिन्न प्रकार से लगाकर उसे बांधकर डिज़ाइन बनायें।

चित्र 25.7

(5) **वस्तु बांधना-** कुछ मोती या पत्थर लें। इन्हें वस्त्र पर डिज़ाइन के अनुसार बांधकर रंगे।

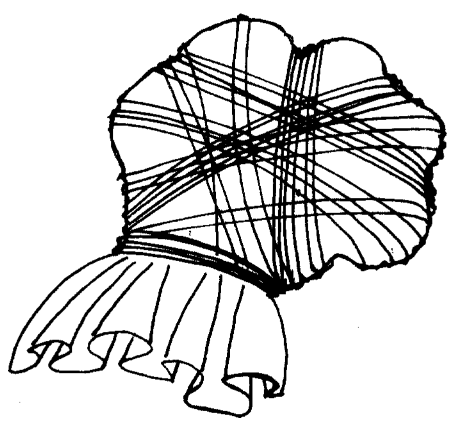

चित्र 25.8

(6) **ट्रिटिक विधि-** वस्त्र पर कच्चे टांके से डिज़ाइन बनायें और फिर धागे को खींचकर बांधकर रंग दें।

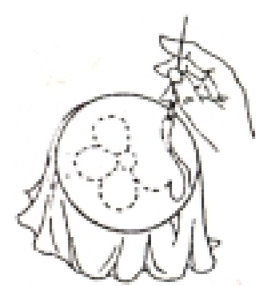

चित्र 25.9

(B) बाटिक

बाटिक रंग प्रतिरोध की एक अन्य तकनीक है। इस विधि में रंग का प्रतिरोध मोम की सहायता से किया जाता है। वस्त्र के चुनिंदा भागों पर, डिज़ाइन के अनुसार, पिघले हुये मोम को लगा देते हैं। जब वस्त्र की रंगाई की जाती है तब मोम लगे हिस्से पर रंग नहीं चढ़ पाता, परिणाम स्वरूप वस्त्र पर एक नमूना बन जाता है। वस्त्र पर मोम किसी ब्रश या फिर लकड़ी के ब्लॉक की सहायता से लगाया जाता है।

चित्र 25.10

(C) छपाई या प्रिंटिंग

छपाई, जैसा कि आप जानते ही हैं वस्त्र पर रंग से नमूने बनाना है। क्या आप कभी डाकघर गये हैं? वहाँ, प्रत्येक पत्र पर एक टिकट लगा होता है जिस पर स्याही पैड पर स्टैम्प को दबाकर मुहर लगा दी जाती है। हाथों द्वारा छपाई भी ठीक इसी प्रकार करते हैं। एक लकड़ी के ठप्पे पर नमूना खोद कर अंकित किया जाता है। इस ठप्पे को गाढ़े रंग के घोल में डुबोकर वस्त्र पर लगाकर डिज़ाइन अंकित कर लिया जाता है। इसे ब्लाक प्रिंटिंग अथवा ठप्पे की छपाई भी कहा जाता है। यही प्रक्रिया घर पर उपलब्ध वस्तुओं की सहायता से भी की जा सकती है, आप अपनी कल्पना शक्ति से कई दिलचस्प नमूने बना सकते हैं।

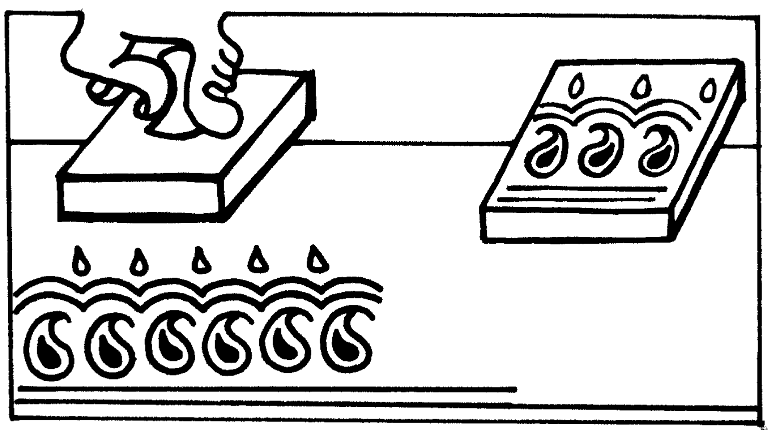

चित्र 25.11: ब्लाक/ठप्पे की छपाई

नीचे कुछ नमूने दिये गये हैं। यह नमूने घर पर पायी जाने वाली सामग्री से ही बनाये गये हैं। क्या आप कुछ अन्य नमूनों व डिज़ाइनों के विषय में सोच सकते हैं?

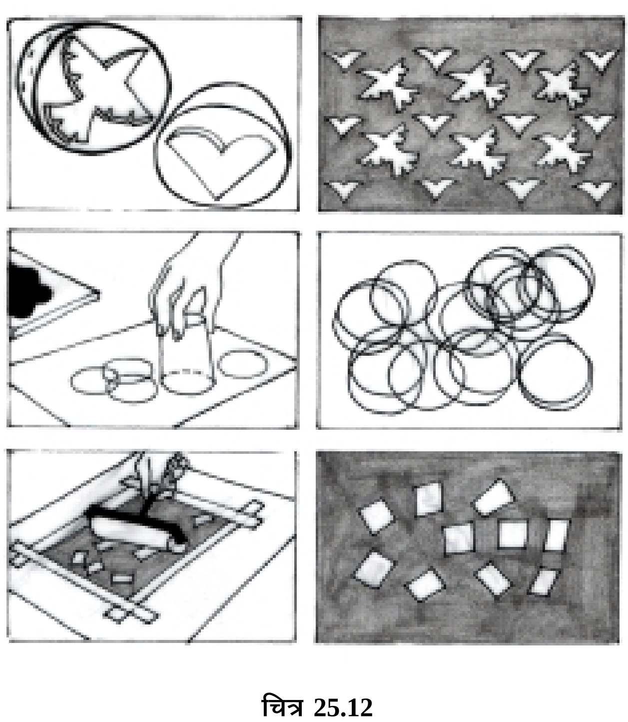

चित्र 25.12

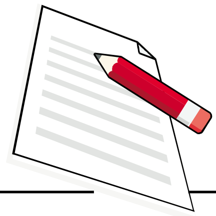

टिप्पणी

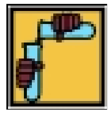

***क्रियाकलाप 25.4*:** घर में ऐसी सामग्री ढूंढें जो ठप्पे के रूप में प्रयोग की जा सके। दिये हुये बॉक्स में उनकी सूची बनायें। इस कार्यकलाप से आप घर पर उपलब्ध सामग्री का रचनात्मक प्रयोग कर सकेंगे।

क्रम संख्या	वस्त्र पर ठप्पे के लिये प्रयोग की जा सकने वाली सामग्री

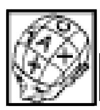

आपने क्या सीखा?

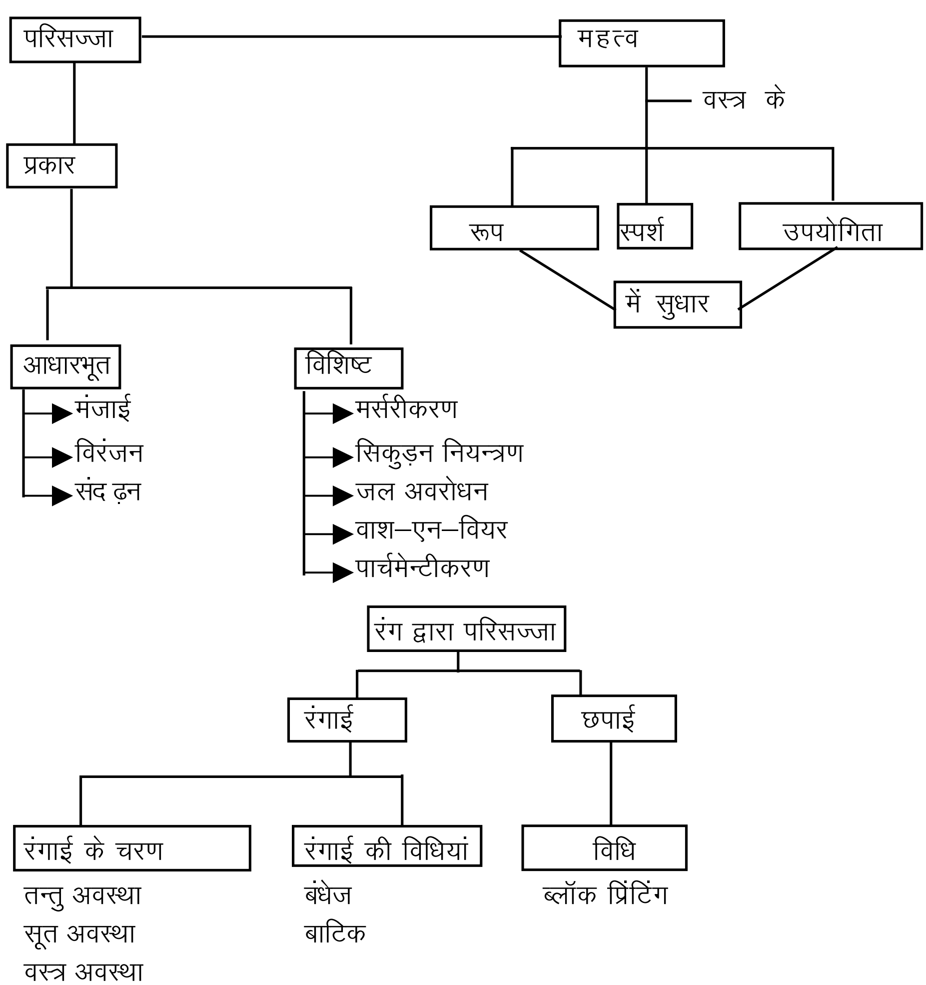

पाठान्त प्रश्न

1. वस्त्र परिसज्जा क्या है? वस्त्रों पर परिसज्जा देना आवश्यक क्यों है?
2. किन्हीं दो आधारभूत परिसज्जाओं की व्याख्या कीजिये।
3. विशिष्ट परिसज्जाओं के नाम लिखिये। प्रत्येक के उपयोग व प्रक्रिया को भी समझाइये।
4. ''रंगाई, रंग द्वारा की जाने वाली परिसज्जा है'', व्याख्या कीजिये।
5. वस्त्र बनाने के किन–किन चरणों में रंगाई की जा सकती है? चित्र सहित समझाइये।
6. छपाई की परिभाषा दीजिये।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

25.1
1. रूप, उपयोगिता
2. आधारभूत/विशिष्ट; अस्थाई/टिकाऊ
3. अस्थाई
4. ग्रे वस्त्र
5. आधारभूत

25.2
1. (i) हाँ, मंजन, वस्त्र की साबुन और रासायनिक पदार्थों द्वारा धुलाई करना है ताकि अशुद्धियां दूर की जा सकें।
   (ii) नहीं, विंरजन बहुत सावधानी पूर्वक किया जाना चाहिये, इससे रंग को हानि पहुँचती है। अधिक तेज विरंजक से कुछ हद तक वस्त्र को भी हानि पंहुच सकती है।
   (iii) हाँ, रातभर वस्त्र को भिगोकर रखने व सुखाने से वस्त्र सिकुड़ जाता है।
   (iv) हाँ, ऐसा पार्चमेन्टीकरण नाम की एक स्थाई परिसज्जा के कारण होता है।
   (v) हाँ, मर्सरीकरण से सूत, मुलायम, चमकदार व मजबूत बनता है।
2. (i) स्थाई, (ii) सेन्फोराइज्ड (iii) विशिष्ट (iv) रंग दृढ़ता
3. (i) मर्सराइजेशन, (ii) संदृढ़न (iii) वाश–एन–वेयर, (iv) जल अवरोधी

अधिक जानकारी के लिए देखें
http:/www.pburch.net